

एक सरकारी स्कूल में पर्यावरण शिक्षा हेंगावल्ली में मेरे अनुभव

दीप्ति अमीन



स्कूल का परिचय

यह शासकीय उच्च प्राथमिक शाला, कर्नाटक के उडुपी ज़िले में कुण्डापुर तालुका के हेंगावल्ली गाँव में है। मेरी मित्र पूर्णिमा इस स्कूल में पढ़ी है और उसके पिता इस स्कूल के सेवानिवृत्त प्रधान पाठक हैं। अतः मेरे और पूर्णिमा के लिए इस काम की शुरुआत यहाँ से करना सुविधाजनक था क्योंकि पूर्णिमा गाँव, गाँववासियों और शिक्षकों को जानती थी। स्कूल में कक्षा 1 से 8 तक के कुल 108 बच्चे और 7 शिक्षक हैं। इस पहल की शुरुआत अक्टूबर 2021 में हुई थी। यह साक्षात्कार-नुमा लेख दूसरे वर्ष के अन्त तक के अनुभवों पर आधारित है।

पहल का परिचय

जब हमने शुरुआत की, उस समय हमारे पास एक ही योजना थी। योजना

बस यह थी कि बच्चों को यह जानने का मौका देना कि उनके साथ उनकी भूमि कौन-कौन साझा करता है, अर्थात् कौन ज़मीन पर रेंगता है, कौन पत्थरों के पीछे छिपता है, कौन पेड़ों पर चढ़ता है व किस तरह के पेड़ों पर चढ़ता है, आसमान में कौन उड़ता है; और वे सब हमारे जीवन को कैसे प्रभावित करते हैं तथा हम उनके जीवन को कैसे प्रभावित करते हैं। हमारे पास न तो कोई पाठ्यक्रम (सिलेबस) था और न ही कोई पूर्व अनुभव। अलबत्ता, हमारे साथ दोस्तों की एक टोली थी, जिन्होंने अपने विचार साझा किए और हम अक्सर उनके साथ बातें किया करते थे कि क्या हो चुका है और क्या करने की ज़रूरत है।

हमने (मैं और मेरे बच्चों ने) लगभग हर चीज़ विभिन्न गतिविधियों - जैसे गड़दे खोदना, बीज बोना, पौधों को पानी देना, निंदाई करना, पक्षियों को निहारना, कार्ड गेम्स तैयार करना, योग करना, खाना पकाना, सफाई करना - और खूब सारी चर्चाओं के माध्यम से सीखी है। कभी-कभी मैं उनका मार्गदर्शन करती थी तो कभी-कभी वे मेरा मार्गदर्शन करते थे। मेरा खयाल है कि एक-दूसरे को बराबर मानने पर आधारित यह सम्बन्ध ही सीखने और विचार साझा करने की कुंजी थी (हाँ, यह ज़रूर था कि निहायत ज़रूरी होने पर मैं एक सख्त शिक्षक की तरह पेश आती थी, और वह ज़रूरत समय के साथ कम होती चली गई)।



प्रश्न: कौन-से अनुभवों ने आपको यह प्रोजेक्ट उठाने में समर्थ बनाया?

मुझे हमेशा से ऐसी जीवन शैली आकर्षित करती थी जो ईको-फ्रेंडली हो, स्वस्थ हो और हर दिन नए-नए हुनर सीखने से भरपूर हो। इस मामले में मेरा पहला सम्पर्क सांगत्या से हुआ था। सांगत्या जैविक कृषि के एक खेत के इर्द-गिर्द गठित एक समूह है। यह जैविक खेत कर्नाटक के उडुपी ज़िले के कराला ब्लॉक में एक ऐसी जगह स्थित है जहाँ कोई बहता पानी नहीं है, कोई मशीनें नहीं हैं और कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है। जब मैं छोटी थी, तब भी मेरा जीवन ऐसा ही था। अन्तर सिर्फ इतना था कि उस समय मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। वह तो जब मैं सांगत्या आई, तब मुझे समझ में आया कि ऐसे जीवन का तभी कोई मतलब है जब वह हम खुद चुनें। और मुझे खुशी है कि मैंने सही समय पर सही चुनाव किया। उसके बाद मेरी ज़िन्दगी बदल गई। इस जगह के ज़रिए मैं कई और लोगों से मिली, नए-नए दोस्त बनाए, और सीखने की चाह में कई अन्य ऐसी ही जगहों पर गई। यही एकमात्र विचार था, वह सीखना जो मैं सीखना चाहती थी, जो मुझे लगता था कि सबसे महत्वपूर्ण है, जो मुझे लगता था कि उस दिशा में आगे बढ़ने के लिए ज़रूरी है। वह यात्रा आज भी जारी है। पिछले कुछ वर्षों में मैंने कुछ अद्भुत आदतें विकसित की हैं; जैसे अपना खाना खुद उगाना, खुद पकाना, सायकिल सवारी करना, पक्षियों को निहारना, पढ़ना, आसपास की खरपतवार और पेड़ों के बारे में जानना, और कुछ असाधारण लोगों की मदद से बच्चों के साथ रहना। इन सब चीज़ों ने मिलकर मेरे जीवन को वह बनाया, जैसा वह आज है।

प्रश्न: आपने क्या सीखा?

सामंजस्य ही कुंजी है। यह मेरा सबसे बड़ा सबक रहा। लोग और चीज़ें, दोनों समय लेते हैं, परिवर्तन में समय लगता है। मनमाफिक परिवर्तन के लिए आप में लगन और धैर्य होना चाहिए। मैंने देखा कि एक बच्चे ने कक्षा में मेरे द्वारा कही गई किसी बात का वास्तविक अर्थ, कक्षा होने के पूरे दो साल बाद समझा था। ऐसी कई घटनाएँ हैं जिनके माध्यम से मैं यह समझ पाई हूँ कि यदि कोई चीज़ करने योग्य है, तो मुझे उसे करते जाना चाहिए, चाहे उसके परिणाम देखने को मिलें या न मिलें - उसी समय या बाद में कभी।

मैंने यह सीखा कि किसी बच्चे को ऐसा शिक्षक नहीं चाहिए होता है जो सिर्फ सिखाए। दरअसल, उसे एक श्रोता की ज़रूरत होती है जो उसकी बात सुने। कई सारे उम्दा विचार मुझे किसी बच्चे को सुनते हुए मिले हैं।

बच्चों ने ऐसी-ऐसी समस्याएँ सुलझाईं जो मैं नहीं सुलझा पा रही थी, और यह सिर्फ सुनने के कारण हुआ। उन्होंने मेरे घमण्ड और अहंकार को कई बार तोड़ा है और इसने मुझे बेहतर बनने में ही मदद की है। शिक्षक कोई व्यक्ति नहीं होता, यह तो उस क्षण निभाया गया एक किरदार होता है। वह किरदार और वह क्षण कोई भी अपना सकता है। तो, मैं अब कक्षा में पढ़ाने के लिए नहीं जाती हूँ। मैं तो यह देखने जाती हूँ कि कौन वह क्षण अपनाता है और उसी के साथ कक्षा शुरू हो जाती है।

मैंने सवालियों को अलग ढंग से पूछना सीखा। जैसे, अतीत में जब मैं बच्चों से कुछ करवाना चाहती थी, तो मैं उन्हें बताती थी कि उसे कैसे करना है, कब करना है, कौन-कौन उस टीम में शामिल होगा वगैरह। अब मैं उन्हें



कहती हूँ, “अरे यार, मैं यह काम करवाना चाहती हूँ। लेकिन मुझे नहीं पता कि तुमसे कैसे करवाऊँ। मदद करोगे क्या?” यह हर बारी कारगर रहता है और मेरी 90 प्रतिशत ऊर्जा बच जाती है। बच्चे योजना बनाने में, खुद को संगठित करने में और अपना नेता चुनने में कहीं बेहतर होते हैं। हाँ, समय ज़रूर ज़्यादा लगता है लेकिन इस प्रक्रिया को देखना अद्भुत होता है और ज़्यादा कार्यक्षम भी।

मैंने सीखा है कि बच्चों को हमेशा समझदारी भरे जवाब देना चाहिए, चाहे उनकी उम्र कुछ भी हो। लिहाज़ा, मैं ऐसे वाक्यों का उपयोग नहीं करती, “मैं तुम्हें बता नहीं सकती, तुम समझ नहीं पाओगे, तुम अभी बहुत छोटे हो, तुम्हें ऐसे सवाल नहीं पूछना चाहिए, तुम्हें यह जानने की ज़रूरत नहीं है” वगैरह। समय के साथ मैंने पेचीदा चीज़ें भी सरल ढंग से समझाना सीख लिया है ताकि कोई भी बच्चा समझ पाए। इस आदत ने मुझे रचनात्मक भी बना दिया। और बच्चों के साथ मेरे सम्बन्ध को पूरी तरह बदल डाला।

प्रश्न: बच्चों ने क्या सीखा?

चूँकि करने/सीखने की जिम्मेदारी बच्चों को ही सौंप दी गई है, इसलिए वे ज़्यादा जवाबदेह महसूस करते हैं। कोई बीज जिसे उन्होंने बोया है, उसे अंकुरित होते देखा है और जिसे उन्होंने सब्ज़ियों की क्यारी में रोपा है, तो निश्चित रूप से उसे पानी दिया जाएगा, उसका अवलोकन किया जाएगा और सुरक्षित रखा जाएगा। वे ध्यान रखते हैं कि भोजन के बाद वे अपनी थाली में पानी भरकर अपने पौधे के पास जाएँ। यह मेरा विचार नहीं था। हर बार भोजन करके अपनी थाली-कटोरी-गिलास धोने के बाद वे उनमें पानी भरकर सीधे पौधों के पास चले जाते हैं।

उन्होंने सीखा है कि किसी भी तरह का प्रश्न पूछने में कोई बुराई नहीं है और चर्चा का हमेशा स्वागत होता है। चर्चाओं के दौरान जो जानकारी वे जुटाते हैं, वह उनके भेजों में सुरक्षित रहती है। और मैंने उन्हें इसका उपयोग अत्यन्त व्यावहारिक रूप में करते देखा है। लिहाज़ा, मैं चर्चा के लिए हमेशा तैयार रहती हूँ, क्योंकि पता नहीं किस चर्चा में से कोई नई खोज ही निकल आए।

बच्चों ने मेरी कक्षा में कायदों को तोड़ना सीखा है। ईमानदारी से कहूँ, तो मुझे लगता है कि इनमें से अधिकांश कायदे बच्चों को दबाकर रखने के लिए और शिक्षक के लिए उन्हें सम्भालना आसान बनाने के लिए गढ़े गए हैं। वे तो जंगल के समान हैं: उद्दण्ड, विविधतापूर्ण और आत्म-सुधार की प्रवृत्ति वाले। उन्हें मात्र सही माध्यम की ज़रूरत है। किसी जंगल को एकल फसल में तबदील करना विकास नहीं होता। तो हम खुशी-खुशी कई कायदों को तोड़ते हैं और परिणाम अद्भुत रहे हैं।

यह आम बात है कि बच्चे शिक्षक के पास शिकायत लेकर पहुँचते हैं। शिक्षक पूरी कहानी सुनता है (हमेशा नहीं) और दोषी को सज़ा देता है। मैंने जितना देखा है, उस हिसाब से तो यह और शिकायतों को ही जन्म देता है। दरअसल, बच्चों को मज़ा आता है जब शिक्षक शरारती बच्चे की पिटाई

करते हैं। इसलिए वे इन्तज़ार में रहते हैं कि कब किसी बच्चे को पकड़कर शिक्षक अपने कमरे में ले जाएँ। मैं इस सबसे इतनी थक गई थी कि मैंने एक छुटकू अदालत लगाने का फैसला किया जिसमें मैं न्यायाधीश नहीं होती हूँ। हम सब दोनों पक्षों को सुनते हैं और सबसे (दोषी ओर पीड़ित समेत) पूछते हैं कि हमें इस मामले में क्या करना चाहिए। हालाँकि, वे शुरुआत इसी से करते हैं, “उसकी पिटाई होनी चाहिए” लेकिन अन्त में वे अद्भुत समाधान ढूँढ़ निकालते हैं। और ज्यादातर समय पीड़ित बच्चा दोषी को माफ़ कर देता है। अर्थात् बच्चों ने खुद से समस्याओं को सुलझाना सीखा है।

प्रश्न: शिक्षकों और स्कूल प्रशासन ने क्या सीखा?

शिक्षक और प्रशासन पहले से कहीं अधिक सहयोगी हुए हैं। कई बार बच्चों को मेरे पास अतिरिक्त सत्र के लिए भेजा गया है - किसी विषय को बेहतर समझने या प्रायोगिक प्रदर्शन के लिए। वे स्वास्थ्य, पेड़-पौधों और जन्तुओं, बागवानी वगैरह में मदद के लिए मुझसे सम्पर्क करते हैं। कई बार ऐसा लगता है कि चीज़ें उनके हाथों से निकल गईं महसूस होती हैं, उदाहरण के लिए, जब बच्चों और मैंने कुत्तों की हड्डियाँ ढूँढ़ निकालीं और तय किया कि उन्हें लायब्रेरी में रखना चाहिए, तब भी उन्होंने (शिक्षकों ने) कोई ऐतराज़ नहीं किया।

प्रश्न: समुदाय ने क्या सीखा?

पालकों के साथ मेरा संवाद अब कहीं बेहतर है। मैं उनसे मिलती रहती हूँ और वे बताते हैं कि उनके बच्चे मेरी कक्षा को कितना पसन्द करते हैं और उन्होंने क्या कुछ नया सीखा है। वे जानते हैं कि मैं पर्यावरण से सरोकार रखती हूँ और हम इसके बारे में बातें भी करते हैं। घर के नज़दीक चीज़ें अधिक बेहतर हैं। इसमें बगीचे की एक बड़ी भूमिका है। यदि बगीचा न हो तो मुर्गियों के दड़बे या मधुमक्खियों को यह भूमिका निभानी पड़ती है। हमारी (मेरी और जीवन की) उठापटक ने हमें कई हुनर सिखाए हैं और लोगों को यह विश्वास दिलाया है कि हम ऐसी कई चीज़ें जानते हैं जो वे नहीं जानते। बीज, पौधों की साझेदारी, नई तरकारियाँ और मधुमक्खियाँ दिखाना सदा मज़ेदार रहा है। मेरा खयाल है कि लायब्रेरी और बगीचा कई मायनों में एक-जैसे होते हैं। जब हम जीवन शैली, पर्यावरण और पारिस्थितिकी के बारे में सीखने की कोशिश करते हैं या दूसरों को सिखाने की कोशिश करते हैं, तो दोनों ही अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं।

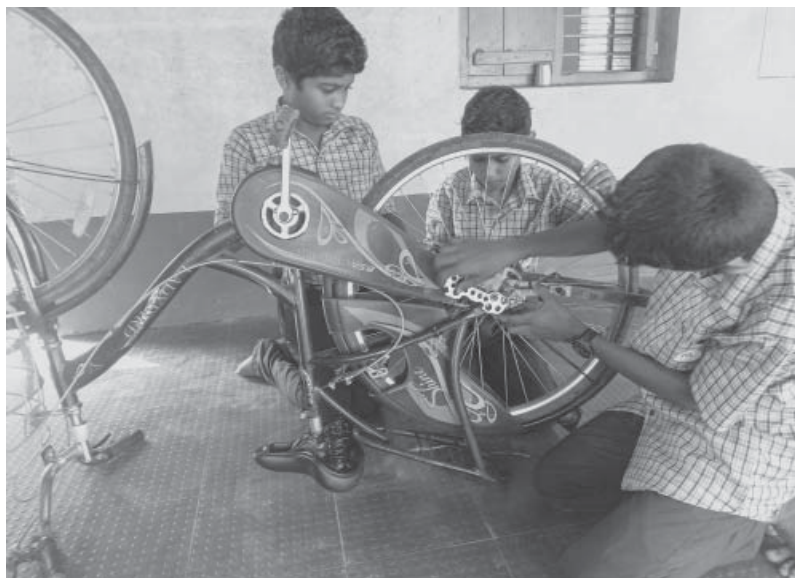
प्रश्न: इस सबने आपके आसपास की प्रकृति को कैसे प्रभावित किया?

आसपास की प्रकृति का अवलोकन करने, उसमें उपस्थित जीवों को पहचानने की आदत ने मुझे और बच्चों को संवेदनशील बनने में मदद की है। घर पर तो बच्चों को हमेशा सिखाया जाता है कि इनसे दूर रहो या इन्हें मार डालो। हमारे स्कूल की शिक्षा ने इसे बदल दिया है। अब बच्चे घर जाते हैं और तथाकथित खतरनाक जीवों के बारे में अपने परिवार की गलतफहमियाँ दूर करते हैं। कई बार बच्चे घर से किसी नई दलील/ गलतफहमी के साथ लौटते हैं और फिर चर्चा के ज़रिए उसका जवाब खोजा जाता है। फिर वे लौटकर अपने पालकों को आश्वस्त करते हैं। यह कई दिनों तक चलता रहता है। इस प्रक्रिया ने यकीनन कई नन्हे जीवों की जान बचाई है क्योंकि बच्चे अब समझते हैं कि उनका जीवन भी महत्वपूर्ण है।

समय के साथ बच्चों की एक राय और बदली है। कई बार यथार्थ में और वृत्त-चित्रों (डॉक्यूमेंटरीज़) में हम देखते हैं कि कुछ जन्तु अन्य पर हावी रहते हैं - प्रकृति में हमेशा तकलीफ, उत्पीड़न, मृत्यु, चोरी, हिंसा, धोखाधड़ी वगैरह ही पाए जाते हैं। हम जानते हैं कि ये सब इन्सानी नज़रिए से नकारात्मक पहलू हैं। समय के साथ बच्चों ने एक अत्यन्त महत्वपूर्ण बात सीखी है कि प्रकृति में अच्छा या बुरा, सौम्य या घृणास्पद व्यवहार कुछ नहीं होता। और यह सब उत्तरजीविता तथा सन्तुलन की ओर यात्रा भर है। वे विभिन्न तरह के चक्रों को समझ पाते हैं। एक मायने में यह उन्हें मानव व्यवहार को समझने में भी मदद करता है।

प्रश्न: आप प्रकृति के साथ संवाद कितना सीख पाई हैं? क्या आपमें से कोई प्रकृति को अपने से संवाद करते सुन पाया?

मैं अपना अधिकांश समय बाहर खुले में बिताती हूँ। और मैं हमेशा कुछ-न-कुछ नया निहारती रहती हूँ। जब मैं बगीचे में जाती हूँ, तो महसूस होता है जैसे मैं लोगों से भरे किसी उत्सव में हूँ। बगीचे में बहुत सारे बाशिन्दे हैं जो अलग-अलग समय पर अलग-अलग जगह साझा करते हैं। मैं बगीचे की कई छिपकलियों से बातें करती हूँ, विभिन्न पेड़ों पर उनकी कलाबाज़ी के हुनर को सराहते हुए। जब कोई मकड़ी जाला बुनती है, तो मैं यह देखने को निश्चल खड़ी रहती हूँ कि वह किस दिशा में आगे बढ़ेगी। मैं चींटियों की कतारों को निहारती रहती हूँ, यह देखने के लिए कि वे कहाँ से आ रही हैं, कहाँ जा रही हैं और क्या ले जा रही हैं। इसके साथ मैंने सीखा है कि मैं चींटियों की मौजूदगी में मजे से टहल सकती हूँ, बशर्ते कि मैं उनकी



कतार पर पैर न रखूँ। आखिर, वे भी तो व्यस्त जीव हैं जो अपने काम-से-काम रखते हैं। मुझे काटना तो चींटियों के लिए एक अनावश्यक अतिरिक्त काम होगा। प्रकृति से संवाद करने का काम बच्चे कहीं बेहतर करते हैं। मैं तो सिर्फ उस सबकी बातें करती हूँ जो मैं प्रकृति में देखती हूँ। दूसरी ओर, बच्चों को पूरा यकीन होता है कि प्रकृति क्या महसूस कर रही है और क्या सोच रही है। मैं उनकी ये बातें सुनते घण्टों बिता सकती हूँ, यह सराहते हुए कि वे कल्पना की छलांग मारने की कैसी ज़बर्दस्त क्षमता रखते हैं।

प्रश्न: किसी युवा व्यक्ति के लिए जो ऐसा ही काम करना चाहे, आपकी क्या सलाह होगी? उसे इस तरह का काम करने के लिए क्या-क्या सीखना होगा?

सबसे पहली बात कि उन्हें सीखने को उत्सुक होना चाहिए। बाहर दुनिया में देखने, महसूस करने, सुनने को इतना कुछ है। और यह सब हमें स्कूलों-कॉलेजों में नहीं सिखाया जाता। इसे सिर्फ निजी दिलचस्पी और प्रयासों से ही सीखा जा सकता है। जो कोई इसी तरह का काम करना चाहे, उन्हें खुद से पूछना चाहिए कि वे इसके प्रति सचमुच जुनूनी हैं या यह महज एक मोहक खयाल है। यदि पक्का न हो, तो किसी ऐसे व्यक्ति के साथ कुछ समय बिताना बेहतर होगा जो पहले से ही यह काम कर रहा/रही हो। उनकी दिनचर्या से कुछ स्पष्टता मिलेगी।

शिक्षक कोई व्यक्ति नहीं होता, यह तो उस क्षण निभाया गया एक किरदार होता है। वह किरदार और वह क्षण कोई भी अपना सकता है।

इनके अलावा कुछ विशिष्ट सुझाव भी साझा करना चाहूँगी।

पुस्तकें – मेरी यात्रा में पुस्तकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। पुस्तकें हमें बहुत सारे नए विचार देती हैं, औरों के अनुभव साझा कर हमारा समय बचाती हैं और जब भी ज़रूरत पड़े, उपलब्ध होती हैं। मैं खुशनसीब थी कि मेरे ऐसे दोस्त थे जो मुझे सही पुस्तकें सुझा और उपलब्ध करवा सकते थे। इस कार्य क्षेत्र से सम्बन्धित पुस्तकों की एक बढ़िया सूची अत्यन्त महत्वपूर्ण और अनिवार्य है।

डायरी – एक नोटबुक रखना और अपने अवलोकन व सबक लिखना हमेशा से उपयोगी रहा है। इसके चलते हम गलतियाँ दोहराने से बच जाते हैं और रास्ता नहीं भटकते हैं।

बच्चों के साथ समय बिताना – सबसे पहले तो आपको उनकी संगत पसन्द होनी चाहिए। उन्हें यह बताने की बजाय कि वे क्या करें, हमें उन्हें सुनना चाहिए। हमारी निजी तैयारी बहुत महत्व रखती है। हम बच्चों को उल्लू नहीं बना सकते। हमें हमारी मिट्टी, हमारे पेड़ और उन पर रहने वाले जीवों के बारे में पता होना चाहिए। यदि इन सबके बारे में हम बच्चों से बात करना चाहते हैं, तो ज़रूरी है कि बच्चों से इनको महसूस करने को कहने से पहले हम खुद इनका अनुभव करें क्योंकि बच्चे जो कुछ सीखेंगे, वह उससे सीखेंगे जो हम सचमुच हैं, न कि हम क्या कहते हैं कि हम कौन हैं।

दीप्ति अमीन: 29 वर्षिय दीप्ति एक प्रशिक्षित प्राकृतिक चिकित्सक (नैचुरोपैथी डॉक्टर) हैं। उनकी दिलचस्पी बच्चों में, जैविक खेती में और पर्माकल्चर व योग में है। वे ग्रामीण बच्चों के साथ काम करती हैं। उनसे drdeepthiamin@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अंग्रेज़ी से अनुवाद: सुशील जोशी: *एकलव्य* द्वारा संचालित स्रोत फीचर सेवा से जुड़े हैं। विज्ञान शिक्षण व लेखन में गहरी रुचि।

सभी फोटो: दीप्ति अमीन

यह लेख countercurrents.org के 17 फरवरी, 2024 के अंक से साभार।